# सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-9 7 से 21 मई, 2014 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये


## केन्द्रीय कार्यालय में मनाया गया पार्टी का स्थापना दिवस

## महान 24 अप्रैल

**कोलकाता :** एसयूसीआई(सी) का 66वाँ स्थापना दिवस 24 अप्रैल कोलकाता में निर्माणाधीन केन्द्रीय कार्यालय में मनाया गया। पार्टी के संस्थापक महासचिव इस युग के विशिष्ट मार्क्सवादी दार्शनिक सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण कर महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने श्रद्धांजली दी। इस अवसर पर वहां मौजूद थे पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी, कॉमरेड रणजीत धर, कॉमरेड असित भट्टाचार्य, केन्द्रीय कमेटी सदस्य और राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु व अन्य। कॉमरेड प्रभाष घोष ने लाल झण्डा फहराया। कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान और अन्तर्राष्ट्रीय गान गाया गया। जनआन्दोलन और श्रमिक संघर्ष को तेज करने की शपथ लेते हुए 24 अप्रैल–एसयूसीआई(सी) का 66वाँ स्थापना दिवस इस राज्य सहित देशभर में जोश-खरोश के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में महान नेता की तस्वीर पर माल्यार्पण, पार्टी का लाल झण्डा फहराना और अनगिनत सभाएं आयोजित हुई।

## बीजेपी की साम्प्रदायिक बयानबाजी को नाकाम करो

### एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 24 अप्रैल 2014 को जारी बयान में कहा :

''संघ परिवार और भाजपा के नेताओं द्वारा नफरत और साम्प्रदायिक उग्रता को हवा देने के उद्देश्य से जिसका एकमात्र लक्ष्य हिन्दू वोटों का सुदृढ़ीकरण करना है और हिन्दू-मुस्लिम वोटरों का निकृष्टतम ध्रुवीकरण करने वाली कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक बयानबाजी की सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) कठोर निन्दा करती है। अमित शाह, गिरिराज सिंह और एम.ए. नकवी जैसे भाजपा नेताओं और विहिप नेता प्रवीन तोगड़िया की बयानबाजी और वक्तव्यों ने यह पर्याप्त रूप से साबित कर दिया कि भाजपा और विहिप एवं अन्य संघ परिवार चोलाधारी बहुत ही सुनियोजित रूप से साम्प्रदायिक नफरत फैला रहे हैं जो वर्तमान में चल रहे संसदीय चुनावों के लाभों को लूटने का सम्मिलित तरीका है। ये घोर साम्प्रदायिक वक्तव्य राष्ट्र के जनवादी वातावरण और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के प्रति एक खतरा बन रहे हैं। इस तरह का घृणापूर्ण प्रचार न सिर्फ नैतिकता की आचार संहिता का उल्लघंन करता है बल्कि एक राजनैतिक पार्टी के पंजीकरण की शर्तों की भी अवहेलना करता है।

हम कड़ाई से मांग करते हैं कि चुनाव आयोग तुरन्त भाजपा और अन्य संघ परिवार के सदस्यों के खिलाफ उचित कार्रवाई के लिए कदम उठाए।

हम आम जनता से भी भाजपा और संघ परिवार के वास्तविक उद्देश्य को समझने की अपील करते हैं। वे भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण जैसे मुद्दों और साथ ही साथ इन सबसे ऊपर भूमण्डलीकरण, निजीकरण और उन नीतियों से जो भारतीय अर्थव्यवस्था को विदेशी पूंजी के लिए खोल रही हैं उनसे जनता का ध्यान भटकाना चाहते हैं। ये यूपीए और एनडीए दोनों सरकारों द्वारा अपने-अपने शासनकाल में लगातार लागू की जा रही हैं। हम साथ ही साथ यह भी अपील करते हैं कि देशवासी एकजुट रहें और भाजपा एवं संघ परिवार के अन्य सदस्यों के इस घृणित खेल को धता बताएं।

## छोटी पार्टियों को चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित करने के कांग्रेसी मुख्यमंत्री के प्रस्ताव का एसयूसीआई(सी) ने किया पुरजोर विरोध

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 28 अप्रैल को निम्नलिखित बयान जारी किया :

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चौह्वाण के उस बयान का हम जोरदार विरोध करते हैं जिसमें उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय पार्टियों और सीमित जनाधार वाली राजनीतिक पार्टियों को संसदीय चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर देना चाहिए ताकि मुख्य धारा की पार्टियाँ संसद में ज्यादा संख्या में सीटें हासिल कर सकें। कांग्रेस के नितांत जन-विरोधी पूँजीपति-परस्त दमनकारी शासन के खिलाफ जब लोगों का गुस्सा और विरोध तेजी से बढ़ रहा है और जिसके परिणामस्वरूप यह पार्टी एक के बाद एक चुनावी पराजय झेल रही है और मौजूदा संसदीय चुनावों में भी पराजय से आशंकित है, ऐसे समय में ऐसा एक प्रस्ताव लाया जा रहा है जो चुनने और चुने जाने के मूलभूत अधिकार का ही उल्लंघन करता है। इसका असल मकसद है पूँजीपति वर्ग स्वार्थ की ताबेदार चन्द पार्टियों के हाथों में राजनैतिक शक्ति को संकेन्द्रित करना और इस प्रकार देश में फासीवाद के विकास की परिस्थितियाँ तैयार करना।

हम लोगों से आह्वान करते हैं कि वे चौकस रहें और राजनैतिक आजादी तथा विधान मण्डलों में अपने पसंद के प्रतिनिधियों को चुनने की स्वतन्त्रता में कटौती करने के शासक एकाधिकारी पूँजीपतियों की घृणित और बदनाम पार्टियों के ऐसे किसी भी कदम को परास्त करें।

# महान 24 अप्रैल — देशभर में मनाया गया एसयूसीआई(सी) का 66वाँ स्थापना दिवस

24 अप्रैल–एसयूसीआई(सी) का 66वाँ स्थापना दिवस देशभर में जोश-खरोश के साथ मनाया गया। सभी जगह सभाए सर्वहारा के महान नेता और पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण व उनपर रचित गान से शुरू हुई और अन्तर्राष्ट्रीय गान के साथ समाप्त हुई।

**दिल्ली :** पार्टी के 66वें स्थापना दिवस पर एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी की ओर से 25 अप्रैल को जवाहर लाल नेहरू युवा केन्द्र एन. डी. तिवारी भवन में एक जन सभा का आयोजन किया गया। सभा में दिल्ली के विभिन्न इलाकों और तबकों से आए लगभग 200 लोगों ने भाग लिया। सभा की शुरूआत सर्वहारा के महान नेता, हमारी पार्टी के संस्थापक महामंत्री कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से हुई। सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती और अध्यक्षता दिल्ली राज्य सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड प्राण शर्मा ने की। सभा को पार्टी के दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड प्रताप सामल ने भी सम्बोधित किया।

(कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण पृष्ठ 3 पर)

**सागर (म.प्र.):** सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के 66वें स्थापना दिवस के अवसर पर 24 अप्रैल को शाम तिली बाघराज वार्ड स्थानीय कार्यालय में आम सभा आयोजित की गई। कॉ. शिवदास घोष की फोटो पर फूल माला चढ़ा कर क्रान्तिकारी श्रद्धाजंलि देते हुए सभा शुरू हुई। सभा के मुख्य वक्ता व एस.यू.सी.आई.(सी) पार्टी के जिला सचिव कॉ. रामअवतार शर्मा ने सभा को सम्बोधित करते

(शेष पृष्ठ 2 पर)

*दिल्ली में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ➤*

## 24 अप्रैल—...

(पृष्ठ 1 का शेष)

हुए कहा कि हम 24 अप्रैल पार्टी स्थापना दिवस चुनावी माहौल में मना रहे हैं जब विभिन्न पूँजीवादी पार्टियाँ बड़े-बड़े चुनावी वायदे करके गरीब मेहनतकश आम जनता को गुमराह कर रही हैं। जबकि आजादी के 67 वर्ष बाद भी गरीब मेहनतकश आम जनता की बुनियादी समस्याएं ज्यों की त्यों बरकरार हैं। लोगों को आसमान छूती महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महिलाओं पर बढ़ते हिंसक अपराध, अश्लीलता, बिजली-पानी-शिक्षा-स्वास्थ्य का निजीकरण आदि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस गम्भीर परिस्थिति में भारत की एकमात्र क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई(सी) बुनिवादी सवालों को लेकर पिछले 66वर्षों से जनआन्दोलन गठित करती आ रही है। एसयूसीआई(सी) पार्टी चुनाव को भी जनआन्दोलन का हिस्सा मानती है और चुनावी माहौल में गरीब मेहनतकश आम जनता को सचेत और संगठित करती रही है और मानती है कि चुनाव के माध्यम से आम जनता की समस्याओं का समाधान संभव नहीं है बल्कि भारत में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति करनी होगी। तभी गरीब मेहनतकश आम जनता की बुनियादी समस्याओं का समाधान संभव है। सभा की अध्यक्षता करते हुए कॉ. अशोक कुशवाहा ने कहा कि 24 अप्रैल 1948 को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कॉ. शिवदास घोष ने एसयूसीआई(सी) पार्टी की स्थापना की थी क्योंकि सीपीआई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी इसलिए क्रान्तिकारी परिवर्तन में भूमिका नहीं निभाई थी।

सभा का संचालन राकेश पटेल ने किया।

**जे.पी. नगर (उ.प्र.):** 24 अप्रैल को श्री गंगासरन सिंह के मकान पर कृषक नगर (अमरोहा) में पार्टी का स्थापना दिवस पूरे सम्मान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हुई जनसभा की अध्यक्षता पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य तथा पार्टी की अमरोहा जिला यूनिट के वरिष्ठ सदस्य कॉ. राजेन्द्र सिंह ने की। पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. विजयपाल सिंह जनसभा के मुख्य वक्ता थे। संचालन पार्टी की जिला अमरोहा यूनिट के इंचार्ज कॉ. शीलकुमार ने किया।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कॉ. विजय पाल सिंह ने कहा कि जब शहीद भगत सिंह व नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का यह सोचना सच निकला कि गोरे अंग्रेजों के जाने के बाद शासन सत्ता काले अंग्रेजों के हाथों में जाने से देश की मेहनतकश जनता का कुछ भला होने वाला नहीं है। तब कॉ. शिवदास घोष ने तमाम क्षेत्रों का अध्ययन करने पर यह निर्णय लिया कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त पर सही कम्युनिस्ट पार्टी का निमार्ण जरूरी है। क्योंकि देश में वास्तव में कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी थी ही नहीं। अत: पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म करके समाजवादी व्यवस्था कायम करने की लड़ाई के लिए उन्होंने 24 अप्रैल 1948 को चन्द साथियों के साथ मिलकर एसयूसीआई(सी) निर्मित की जो अब देश के लगभग 22 राज्यों में मेहनतकश आवाम के जीवन के जरूरी मुद्दों को लेकर आन्दोलनरत है।

अन्त में अध्यक्षीय भाषण में कॉमरेड राजेन्द्र सिंह ने कहा कि लोगों में व्यक्तिवादी सोच व स्वार्थपरता के चलते क्रान्तिकारी आन्दोलन खड़ा करना आज मुश्किल काम जरूर है किन्तु नामुमकिन नहीं है। हमें हताशा-निराशा को छोड़कर एकजुट होकर आन्दोलन करने की जरूरत है। आज इस अवसर पर हम सभी संकल्प लें कि कॉ. शिवदास घोष के मार्गदर्शन पर चलते हुए उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के संघर्ष में अपने को लगा दें।

**दुर्ग (छ.ग.):** 24 अप्रैल को हमारी प्रिय पार्टी सोशलिस्ट यूनिट सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का स्थापना दिवस पूरे सम्मान के साथ नेताजी सुभाष स्कूल कैलाश नगर में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. गोपाल कुण्डू थे। कार्यक्रम की शुरूआत कॉ. शिवदास घोष के फोटो पर माल्यार्पण करके हुई। सबसे पहले कॉ. घोष पर रचित गीत गाया गया। उसके बाद पार्टी पर रचित गीत गाया गया। कॉ. गोपाल कुण्डू ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज दुर्ग में वोटिंग का दिन है और आज ही के दिन हमारी प्रिय पार्टी का स्थापना दिवस है। हमारे शिक्षक, पथ-प्रदर्शक कॉ. शिवदास घोष ने दिखाया है कि इस ससदीय चुनाव से आम जनता की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। आम मेहनतकश जनता को एकजुट होकर सही क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व में आन्दोलन कर क्रान्ति करनी होगी। इसके लिए उच्च नीति-नैतिकता, चरित्र को आत्मसात कर आम जनता को सचेत, संगठित व समस्याओं के खिलाफ जन-कमेटियाँ बनाकर आन्दोलन करना होगा। कार्यक्रम का संचालन कॉ. महेन्द्र साहू द्वारा किया गया। इस अवसर पर एस. यू.सी.आई.(सी) के दुर्ग जिला कमेटी के सचिव कॉ. विश्वजीत हरोड़े सहित अन्य पार्टी सदस्य एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

**हरियाणा :** एसयूसीआई (सी) के स्थापना दिवस पर 24 अप्रैल को भिवानी व हांसी, 25 अप्रैल को गुड़गांव, 26 अप्रैल को कुरूक्षेत्र व नारनौल, 27 अप्रैल को झज्जर, सोनीपत, व रिवाड़ी में जनसभाएं की गई। हांसी, गुड़गांव, नारनौल व रिवाड़ी में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य एवं राज्य सचिव कॉ. सत्यवान, झज्जर में राज्य कमेटी सदस्य कॉ. अनूप सिंह व भिवानी, कुरूक्षेत्र व सोनीपत में राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल मुख्य वक्ता थे। सभा की अध्यक्षता पार्टी के जिला सचिवों ने की। देश के राजनैतिक क्षितिज पर मंडराते फासीवाद के काल बादलों का जिक्र करते हुए वक्ताओं ने पार्टी को मजबूत करने व जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं पर जनआन्दोलन तेज करने का आह्वान किया।

दुर्ग (छ.ग.)

गुड़गांव (हरियाणा)

सोनीपत (हरियाणा)

कुरूक्षेत्र (हरियाणा)

हांसी (हरियाणा)

झज्जर (हरियाणा)

नारनौल (हरियाणा)

**नारनौल में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान**

# एकमात्र कॉमरेड शिवदास घोष के विचार ही रास्ता दिखा सकते हैं

## पार्टी स्थापना दिवस पर 25 अप्रैल को दिल्ली में आयोजित जनसभा में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

कॉमरेड्स,

आप जानते हैं देश भर में हम पार्टी स्थापना दिवस मनाते हैं। स्थिति में परिवर्तन होता रहता है। किस तरह का परिवर्तन हो रहा है इसे हमें समझना चाहिए। हर साल जिस प्रकार स्थिति बदलती है उसका विश्लेषण करते हुए हमारा आन्दोलन किस तरह से संचालित होगा इसका फैसला हम लेते हैं। एक पूँजीवादी देश में जब तक राजसत्ता पूँजीपति वर्ग के हाथ में रहती है, अर्थव्यवस्था पूँजीवादी रहती है मतलब जहाँ तमाम उत्पादन के साधनों-उद्योगों, फैक्ट्रियों, मिलों, बड़ी-बड़ी जमीनों, बड़े-बड़े व्यापार पर कुछ मुट्ठीभर लोगों का कब्जा रहता है। वहीं दूसरी तरफ लाखों-करोड़ों मेहनतकश जनता अपनी मजदूरी को, श्रम शक्ति को बेचने पर मजबूर होती है। हम अपनी श्रम शक्ति को बेचते हैं और मालिक हमारी श्रम शक्ति को खरीदते हैं। इससे साफ जाहिर है कि दोनों का हित बराबर नहीं हो सकता है। स्वाभाविक है कि जो हमारी श्रम शक्ति को खरीदते हैं और हम जो उनको अपनी श्रम शक्ति बेचते हैं दोनों की स्थिति बराबर नहीं हो सकती है। सिर्फ इतना ही नहीं कि दोनों के हितों में फर्क है बल्कि दोंनो के हित एक दूसरे के विरोधी हैं। मालिक के लिए जो हित में है मजदूर के लिए ठीक उसके उल्टा है। मजदूर के लिए जो हितकर है वो मालिक के लिए नुकसानदेह है। इन दोनों वर्गों का संघर्ष निरंतर चल रहा है। जब तक पूँजीवादी व्यवस्था चलती रहती है, मालिक मजदूर सम्बन्ध कायम रहता है। तब तक इसमें कोई आमूल परिवर्तन जिसे हम गुणगत परिर्वतन कहते हैं वह नहीं होता है। मार्क्सवाद की भाषा में जिसे हम धीमा, धीरे-धीरे होने वाला परिवर्तन कहते हैं यानी परिमाणगत परिवर्तन होता है। तो परिमाणगत परिवर्तन होते-होते एक स्तर पर जब यह परिवर्तन खुले संघर्ष का रूप ले लेता है तभी क्रान्ति होती है।

चुनाव से पहले जो स्थिति थी अब चुनाव खतम होने जा रहे हैं। स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ है। क्या परिवर्तन हुआ? क्या महंगाई घट गई? नहीं! बेरोजगारी जैसी थी वैसी ही है। सभी क्षेत्रों में देखने में लगता है एक ही जैसा है। लेकिन जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। कहाँ? राजनैतिक क्षेत्र में और यदि गहराई से देखें तो चिन्तन के क्षेत्र में भयंकर परिवर्तन आया है। लोगों को पागल बनाया जा रहा है। आप टीवी में देखते होंगे मोदी का भाषण निरन्तर दिखाया जा रहा है। मैं क्या-क्या करूँगा, कांग्रेस कुछ नहीं कर पाएगी, मैं करूँगा। यही सब है। यदि आप ध्यान से सुने तो इसमें सीखने समझने के लिए कुछ भी नहीं है। लेकिन हल्ला मचा हुआ है। इसका मतलब क्या है? विचार नहीं, विश्लेषण नहीं, एक अंधी मानसिकता देश भर में तैयार हो रही है। सिर्फ इतना ही नहीं यदि और भी गहराई से हम देंखें तो एक हिन्दू कट्टरवादिता, एक उग्र हिन्दू मानसिकता जन्म ले रही है। कल मोदी ने वाराणसी से पर्चा भरने से पहले कहा कि मैं आया नहीं मुझे बुलाया गया है। गंगा माँ ने मुझे बुलाया है। आज अखबारों में हैडलाइन है। क्या मतलब? हमारे देश में यह इतनी गहरी अंधी मानसिकता एक सबसे बड़ी समस्या है। गंगा माँ ने मुझे बुलाया है और लोग विश्वास कर लेते हैं। ऐसा कभी होता है कि गंगा बुलाती है? लेकिन लोग मानते हैं और ये जो मानने का मन है इस पर वो क्रिया कर रहा है।

इन्हीं बीजेपी एवं संघ परिवार के लोगों ने दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किया था। एक भयंकर हिन्दुत्ववादी मानसिकता देश भर में तैयार की थी। हिन्दू उग्र मानसिकता भड़काने के लिए एल.के. आडवाणी ने देश भर में रथयात्रा की थी। इसके परिणामस्वरूप आखिर तक बाबरी मस्जिद ध्वस्त कर दी गई। उसके बाद देश भर में हिन्दू-मुसलमान दंगे हुए। ये हैं एक दुष्ट शक्ति, खतरनाक ताकत। इसके बाद 2002 का गोधरा काण्ड हुआ। कार सेवक जो अयोध्या में राम मन्दिर बनाने के लिए ईंट लेकर गए थे जब लौट रहे थे तो ट्रेन में आग लग गई। कुछ कार सेवकों की मृत्यु हो गई। बाद में तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद ने भूतपूर्व जज यू. बैनर्जी से एक जाँच कराई थी जिन्होंने दिखाया था कि बिजली शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी थी। लेकिन शोर मचा दिया कि मुसलमानों ने आग लगा कर हिन्दुओं को जला दिया। गोधरा की घटना के बाद गुजरात में दंगे भड़काए गए। ये मोदी उस समय मुख्यमंत्री थे। 1992 के ठीक दस साल बाद पुनः हिन्दू कट्टरतावाद भड़काया गया था। आज वे कह

रहे हैं कि कोर्ट ने बरी कर दिया क्योंकि कोई साक्ष्य नहीं था, उनको पकड़ा नहीं गया था। यदि पकड़ा न भी गया हो फिर भी एक प्रदेश के मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी बनती है कि यदि एक भी नागरिक पर हमला हो तो उसकी रक्षा करना। हजारों लोगों को सरासर कत्ल कर दिया। गर्भवती महिला का पेट चीर कर बच्चा निकाल कर त्रिशूल पर टांग कर आग लगा दी। कितना जघन्य अपराध हुआ और वे कहते हैं कि मैंने तो नहीं किया। आपने नहीं किया लेकिन आप के शासन काल में आप की नाक के नीचे ये जो भयंकर काण्ड हुआ क्या एक भी नागरिक की रक्षा आप कर पाए? यदि आपने करवाया नहीं भी हो, रक्षा तो नहीं कर पाए! तो क्या सुशासन दोगे? ये इतिहास है। आज क्या हो रहा है? जिस प्रकार 1992 में बाबरी मस्जिद तोड़ने के लिए देश भर में एक भयंकर हिन्दू उग्र मानसिकता का माहौल तैयार किया था। 2002 में गोधरा काण्ड को बहाना बना कर उग्र हिन्दू मानसिकता भड़का कर कई हजार मुसलमानों को कत्ल किया गया। आज वे ऐसे हिन्दू कट्टरवादिता की सीधी-सीधी बात नहीं कर रहे हैं। लेकिन जब नरेन्द्र मोदी का नाम प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में घोषित किया गया तो साथ ही साथ मुजफ्फरनगर में दंगा शुरू हुआ। नाम से ही हुआ, इससे कोई इंकार कर सकता है। आज देखिए नरेन्द्र मोदी खुद एक भी साम्प्रदायिक बात नहीं कर रहे हैं। ये एक भयंकर साजिश है। वे एक भी साम्प्रदायिक बात नहीं कर रहे फिर भी एक हिन्दू मानसिकता तैयार हो रही है। साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दू-मुसलमान का ध्रुवीकरण, विभाजन हो रहा है। लेकिन ये इतने कट्टर हैं जैसे अमित शाह चुप नहीं रह सका, उसने बोल ही दिया कि बदला लेना है। मुजफ्फरनगर में आप पर मायने, जाटों पर जो हमला हुआ उसका बदला लो। इसका मतलब क्या है? जब पकड़ा गया तो कहा कि बदला मतलब बटन दबा कर बदला लेने के लिए मैंने कहा था। ये तो चालाकी है। और यदि वोट के लिए भी कहो बदला लेना है तो ये जो अभिव्यक्ति बहुत ही आक्रामक है। किसका बदला लेना? तुम पर जो हमला हुआ, तुम पर तो नही, हमला तो हुआ मुसलमानों पर।

ये भी एक विषय है। अल्पसंख्यक हमला करें बहुसंख्यक पर ये कभी नहीं होता है। पाकिस्तान में कुछ हिन्दू हैं हालांकि बहुत कम हैं लेकिन हैं। वे क्या दंगा कर सकते हैं? कहीं भी अल्पसंख्यक दंगा नहीं कर सकते क्योंकि वे जानते हैं कि दंगा करेंगे तो वे खत्म हो जाएंगे। बहुसंख्यकों का एक साम्प्रदायिक तबका कुछ खास उद्देश्य को लेकर दंगा कराता है। क्यों कराता है? दो चीजें आपको समझनी होंगी, बड़ा जटिल विषय है। एक है चुनाव के वक्त हिन्दू वोटों का ध्रुवीकरण करने के लिए, वोट बैंक तैयार करने के लिए। दूसरा है, आज देश में हर क्षेत्र में भयंकर स्थिति है। जिन्दगी का ऐसा कोई पहलू नहीं है जहाँ संकट न हो। जीना दूभर हो गया है। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक चौतरफा संकट और सबसे भयंकर संकट है सांस्कृतिक क्षेत्र में। भ्रष्टाचार से देश भर गया है। महिला पर हमला ये जो दिल्ली में 'दामिनी' पर हमला हुआ था, गैंग रेप के बाद मार देना, रेप और मर्डर की घटनाएं बढ़ रही हैं। ये जो परिस्थिति पैदा हुई है। जिन्दगी धीरे-धीरे पीछे जा रही है। हर क्षेत्र में भयंकर संकट है और इस संकट का जिन्दगी पर जो प्रभाव है इसकी वजह से यदि कहीं भी एक आन्दोलन शुरू हो जाता है तो लोग उसमें कूद पड़ते हैं। जैसे अन्ना हजारे का आन्दोलन आपने देखा। उनका कोई संगठन नहीं था, आज भी नहीं है लेकिन जब उन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन शुरू किया तो सिर्फ दिल्ली में ही नहीं देश भर के तमाम बड़े-बड़े शहरों में बैंगलोर मुम्बई से शुरू कर अन्य बहुत से शहरों में हजारो-हजार लोग इसमें शामिल हो गए। क्यों? सिर्फ भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं, हालांकि भ्रष्टाचार एक मुद्दा था। असल में लोगों के मन में गुस्सा और आक्रोश जमते-जमते ऐसा हो गया है कि कहीं भी आन्दोलन शुरू होता है तो जनता उसमें जुट जाती है। अर्थात् जनता एक रास्ता खोज रही है जिस रास्ते से उनकी समस्याएं हल हो जाएं। लेकिन जनता में आन्दोलन की जो ये चाह है इससे पूँजीपति वर्ग बहुत भयभीत है। जैसे दिल्ली में गैंग रेप की घटना के बाद हर उम्र के हजारों-हजार नौजवान लड़के लड़कियाँ जिस प्रकार से जुट गए थे इसको पूँजीपति वर्ग देख रहा है। वह डर रहा है। यदि जनता का आन्दोलन कभी भी ऐसा भयंकर, सचेत और संगठित रूप ले ले तो वह इस पूँजीवाद को ही उखाड़ फैंकेगा। इसीलिए पूँजीपति वर्ग चाहता है कि जनता में फूट डालो। जात-पात, धर्म, सम्प्रदाय, इलाका, भाषा, क्षेत्रीयता के आधार पर जनता में फूट डाल दो ताकि जनता मे आन्दोलन की जो मानसिकता है वह खत्म हो जाए।

चुनाव के सामने बीजेपी सोच रही है कि हिन्दू-मुसलमान की बातें करने से हिन्दू वोट हमें मिलेगा। हिन्दू वोट ज्यादा हैं। नरेन्द्र मोदी कह रहे हैं नहीं, नहीं, ऐसा खुल्लमखुल्ला नहीं कहना चाहिए। ये जो अमित शाह ने बोल दिया कि बदला लो। ऐसी ही नकवी का एक स्टेटमेण्ट है हम यदि सरकार बनाएं तो हम राम मन्दिर भी बनाएंगे। नकवी एक मुसलमान हैं वह महाहिन्दू बन गये। हर समुदाय में ऐसे दलाल मिलते हैं। गिरीराज कह रहे हैं कि मोदी को वोट न देने वालो पाकिस्तान चले जाओ। ये सब क्या बातें चल रही हैं? और मोदी कह रहे हैं कि ऐसा नहीं बोलना, ऐसा कहने से हमारा नुकसान होगा। अभी चुप रहो, जो कुछ करना है बाद में करूँगा। अरुण जेटली भी यही कह रहे हैं। मन्दिर भी बनाएंगे या जो कुछ करना है करेंगे। धारा 370 यानी कश्मीर की पूर्ण स्वायत्तता या ऑटोनोमस राइट कश्मीर का एक बहुत ही न्यायसंगत दावा और न्यायसंगत मांग है। इस धारा 370 को तो खत्म कर देना चाहते हैं लेकिन सामने नहीं कहना चाहते हैं। हालांकि रथयात्रा के बाद 1992 में बाबरी मस्जिद को ध्वस्त करने जैसी हरकतें और 2002 में गोधरा काण्ड के बाद दंगे भड़का कर हिन्दू-मुसलमान में फूट डालने जैसी बातें इस बार नहीं बोली जा रही हैं। इतना कुछ न करने के बावजूद भी लोगों में एक विभाजन आ गया है। हिन्दू कट्टरवादिता इतनी भयंकर बढ़ गई है कि थोड़ी बहुत बात से ही लोग विभाजित हो रहे हैं।

आम जनता, खासकर मेहनतकश लोगों का मोदी के पीछे जाने का कोई कारण नहीं है। वे जिस गुजरात मॉडल की बात कर रहे हैं उस गुजरात मॉडल का रूप क्या है? जिस-जिस क्षेत्र में वे दावा कर रहे हैं कि गुजरात सबसे आगे है हमने दिखाया कहीं भी एक भी क्षेत्र में गुजरात आगे नहीं है। दूसरे-दूसरे राज्य उससे बहुत आगे हैं। गुजरात में पिछले 10 सालों में 7000 से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है। सूरत में कई लाख मजदूर बाहर से महाराष्ट्र से, उड़ीसा से, यू.पी. से, बिहार से आकर मजदूरी का काम करते हैं। अधिकतर पॉवर लूमों में काम करते हैं। एक-एक व्यक्ति आठ या दस पॉवर लूमों पर रात में 12-12 घण्टे काम करता है फिर भी मजदूरी पूरी नहीं मिलती है। किस विकास की बात आप कर रहे हैं ये जानना चाहिए। मोदी के मुख्यमंत्री बनने से पहले गुजरात का जितना विकास हुआ था मोदी आने के बाद उतना नहीं हुआ। शुरूआत से ही यहाँ तक कि अंग्रेजी शासन के समय से ही गुजरात औद्योगीकृत था। अहमदाबाद कॉटन टैक्सटाइल इण्डस्ट्री के लिए मशहूर था। बॉम्बे, अहमदाबाद, कानपुर ये सब कॉटन टैक्सटाइल इण्डस्ट्री के लिए जाने जाते थे। लेकिन आज वहां क्या हालत है? ज्यादा से ज्यादा कॉटन टैक्सटाइल इण्डस्ट्री बन्द हो गई हैं। एक कारखाना खुलता है तो दस बंद हो जाते हैं। स्थिति ऐसी है। देखिए क्या बात हो रही है विकास होगा, विकास होगा के नाम पर लोगों को धोखा दिया जा रहा है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# कॉ. चक्रवर्ती का भाषण

( पृष्ठ 3 का शेष )

लेनिन ने दिखाया था, स्टालिन ने और भी आगे जा कर दिखाया था और बाद में कॉमरेड शिवदास घोष ने वही चीज दिखाई कि आज जब पूँजीवाद अपने उच्चतम स्तर यानी साम्राज्यवादी स्तर में पहुँच गया है तब इसके बाद इसका और विकास हो नहीं सकता है बल्कि इसका पतन होगा। साम्राज्यवादी स्तर पर पहुँचने के बाद पूँजीवाद का पतन हो रहा है। आज औद्योगिकीकरण हो ही नहीं सकता है। इसका विकास हो ही नहीं सकता है। ये मार्क्सवाद की बुनियादी बात है। समाज में हो, प्रकृति में हो, जीवन में हो जो चीज आती है वह पहले प्रगतिशील रहती है क्रान्तिकारी रहती है, इसका विकास होता है। होते-होते उच्चतम स्तर पर पहुँचने के बाद इसका पतन होगा ही। इसको चले जाना है। आप बूढ़े हो गए अब पतन हो रहा है। आप कितना ही प्रयास करो आखिर तक जिन्दा नहीं रह सकते, मरना ही होगा। यही प्राकृतिक नियम है।

शुरूआत से तो पूँजीवाद नहीं था। इससे पहले सामंती व्यवस्था थी। जब सामंतवाद पुराना हो गया तो वह चला गया। उसके बाद पूँजीवाद आया। इसको भी आये लगभग 300 साल हो गए। पूँजीवाद आज मरणासन्न हो चुका है। पूँजीवाद के विकास की और कोई गुंजाइश नहीं है। विकास हो ही नहीं सकता और ये लोग विकास-विकास चिल्ला रहे हैं और लोग भी झांसे में आ रहे हैं, खासकर नौजवान। नौकरी नहीं है। उनको नौकरी चाहिए। सोचते हैं मोदी आ कर इतने उद्योग लगाएंगे कि हमारी नौकरी लग जाएगी। इससे बड़ी भ्रान्ति और क्या हो सकती है। नौजवानों को समझना चाहिए कि इस पूँजीवादी व्यवस्था में एक-दो कारखाना यदि लगे भी तो दस कारखाने बन्द हो जाएंगे। कारखाना तो तब बनेगा जब बाजार हो। अर्थव्यवस्था में लोगों की खरीदने की क्षमता को बाजार कहा जाता है। पूँजीवादी शोषण के चलते जब लोगों की खरीदने की क्षमता घट रही है और घटते-घटते बाजार संकुचित होते-होते आज इतना संकुचित हो गया है कि जितने सारे कारखाने, उद्योग-धन्धे आदि हैं उनकी उत्पादन क्षमता का पूरा-पूरा इस्तेमाल भी नहीं कर पा रहे हैं। फिर अतिरिक्त उत्पादन होने से बेचेंगे कहाँ? अपने अनुभव से ही आप समझ सकते हो। बाजार में खरीददारी के लिए जाइए, देखेंगे कपड़े इत्यादि पर 70% छूट, 50% छूट। 100रु की चीज 30 रु. या 50 रु. में दे तो लोग खरीदते हैं। क्यों? खरीदने लायक लोग नहीं हैं, बाजार नहीं है। जहाँ बाजार नहीं वहाँ कारखाना बनेगा कैसे? पूँजी लगा कर जो उत्पादन करेंगे वह यदि बाजार नहीं तो बिक नहीं पाएगा। तब मालिक लोग कारखाना क्यों लगाएंगे? लगाता भी नहीं है। दुनिया भर में पूँजीवाद का बाजार संकुचित होता जा रहा है। इसी वजह से जो उद्योग लगे हुए हैं उनमें भी पूरा उत्पादन नहीं हो पा रहा है। पूँजी निठल्ली हो गई है। इस निठल्ली पूँजी का वे मिलिट्राईजेशन कर रहे हैं। हथियार बनाओ, युद्ध का साजो-सामान तैयार करो। आम आदमी के लिए तोप टैंक बनाने की क्या जरूरत है? लेकिन सभी देशों में, खासकर हमारे देश में हर साल मिलिट्री बजट बढ़ रहा है। क्यों? यदि इस निठल्ली पूँजी का इस्तेमाल न करें तो यह भयंकर दुश्मन हो जाती है। अरेबियन नाइट्स की कहानी आपने सुनी होगी जिसमें जिन्न मछुआरे से कहता है कि मुझे काम देते रहोगे तो ठीक है वरना मैं तुम्हें मार दूँगा। निठल्ली पूँजी भी ऐसी ही है। काम में लगाओ, नहीं तो सब कुछ खत्म कर देगी। पूँजीवाद खत्म हो जाएगा। इसलिए पूँजी को हमेशा काम में लगाना होता है। कहाँ लगा रहा है प्रतिरक्षा उद्योग में। प्रतिरक्षा उद्योग के लिए सब कुछ चाहिए। इस स्थिति के बारे में स्टालिन ने बहुत पहले दिखाया था, फिर कॉमरेड घोष ने इसके बारे में दिखाया था।

विकास-विकास का जो शोर मचा रहे हैं क्या इस स्थिति में विकास हो सकता है? ये एक धोखेबाजी है। इस बात को छोड़िए! मान लिया जाए कुछ कारखाने वे लगाएं भी तो इस विकास का फायदा किसे हो रहा है? आपको ख्याल करके जानना पड़ेगा कि इस तरह का विकास यदि किसी ने किया तो वह कांगेस ने ही किया। जितने भी आधारभूत और मूलभूत उद्योग जैसे दुर्गापुर, राऊरकेला, भिलाई, बोकारो, विशाखापट्टनम, सेलम के सब स्टील उद्योग ऐसे ही बीईएल, बीएचईएल, एचएमटी, आईटीआई जितनी सारी इण्डस्ट्रीज जिनको हम सार्वजनिक उद्योग कहते हैं, कांग्रेस के शासन में लगे। मोदी गिन के बताए उसने कितने उद्योग लगाए? एक ही नाम ले सकता है टाटा की नैनो फैक्टरी जो पश्चिम बंगाल के सिंगूर में लगनी थी। वहाँ से आई। उसके लिए कई हजार एकड़ जमीन लगभग मुफ्त में दे दी गई। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि उसके लिए पानी, बिजली पर सब्सिडी, टैक्सों में छूट जिसे हम टैक्स होलीडे कहते हैं, सब दिया गया। इस सब का आंकलन करें तो 30,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा सरकारी खजाने से टाटा को नैनो बनाने के लिए दिए गए। इससे भी बड़ी बात है मोदी ने उसको आश्वासन दिया कि यहाँ हम मजदूर आन्दोलन नहीं होने देंगे और इसको कह रहे हैं विकास। कितना विकास हुआ? इसलिए क्या हुआ, देश के जितने भी बड़े-बड़े पूँजीपति हैं अम्बानी, अदानी, टाटा ये सब मोदी को सामने ला रहे हैं। ये जो लाखों करोड़ों रुपये चुनाव प्रचार पर खर्च हो रहे हैं ये कहाँ से आते हैं। कांग्रेस के लोगों ने भी स्वीकार किया कि पूँजीपति घराने जो चन्दा देते हैं उसका बड़ा हिस्सा बीजेपी को मिल रहा है हमें नहीं।

पूँजीवाद आज गहन संकट में फंसा हुआ है। सन् 1930 में एक मंदी आई थी जिसे महामन्दी (ग्रेट डिप्रेशन) कहा जाता है। इसके कारण द्वितीय विश्व युद्ध हुआ था। 2008 में जो मन्दी आई यह उससे भी भयंकर, उससे भी गहरी और प्रलम्बित थी जिसका असर आज तक चल रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक पाँच करोड़ लोगों की नौकरी चली गई। असल आंकड़े इससे कहीं ज्यादा हैं। इस स्थिति में इस विकास का मतलब क्या है? यदि विकास होता भी है जैसे कांग्रेस ने कुछ किया था तो इस विकास का नतीजा क्या निकला? किसके लिए विकास? इस सारे विकास का फायदा तो पूँजीपतियों ने उठाया। परिणाम क्या हुआ? दुनिया के सबसे धनाढ्य पूँजीपतियों की लिस्ट में हमारे देश के चन्द पूँजीपतियों का नाम भी शामिल हो गया। जबकि देश के 70% लोग रोजाना 20 रुपये से ज्यादा खर्च करने की हैसियत नहीं रखते हैं। तो पूछा जाए बताओ विकास किसके लिए हुआ? वह चाहे मोदी हो, राहुल हो यह कोई नहीं बताएगा। मैंने पहले ही बताया कि एक पूँजीवादी देश में दो विरोधी वर्ग होते हैं। मालिक हैं और मजदूर हैं। इन दोनों का हित एक दूसरे के विपरीत होता है। यदि मालिक का विकास होता है तो मजदूरों का सत्यानाश होता है। हुआ भी। तो बताओ विकास किसके लिए? एक वर्ग विभाजित समाज में कोई पार्टी या नेता इन दोनों वर्गों का स्वार्थ एक साथ सिद्ध नहीं कर सकता है। ऐसा हो भी नहीं सकता है। जो कहते हैं वो लोगों को धोखा देते हैं, झूठ बोलते हैं। इसीलिए उनसे पूछना चाहिए बताओ किसके विकास की बात कर रहे हो—पूँजीपतियों के विकास की या आम लोगों के।

भयंकर संकट में डूब रहे मरणासन्न पूँजीवाद को बचाने के लिए ये भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की नीतियाँ लागू की गई हैं। दुनिया के तमाम पूँजीपतियों ने मिलकर भूमण्डलीकरण की नीति को अपनाया है। जब सोवियत यूनियन जिन्दा था, समाजवादी राजसत्ता थी, समाजवादी बाजार था उस समय भी पूँजीपतियों ने भूमण्डलीकरण करने का प्रयास किया था लेकिन कर नहीं पाये थे। सोवियत यूनियन में और बाद में चीन में भी जब समाजवाद का पतन हुआ तब अंतर्राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग जिसमें भारतीय पूँजीपति भी शामिल थे, इस भूमण्डलीकरण की नीति को लाया था। इसका परिणाम क्या हुआ? शिक्षा व्यवस्था, स्कूल, कॉलेज यूनिवर्सिटियाँ सब निजी हाथों में जा रही हैं। शिक्षा जनता की पहुँच से बाहर होती जा रही है। गरीब की बात छोड़िए यहाँ तक कि माध्यम वर्ग के लिए भी पढ़ाई कर पाना आसान नहीं रहा। इंजीनियरिंग, मेडिकल कोर्स जिसे हम पसंदीदा कोर्स कहते हैं वह तो मिलेगा ही नहीं। लाखों-लाख रुपए लगते हैं। स्वास्थ्य सेवा का व्यापक निजीकरण हो रहा है। सरकारी हस्पतालों की हालत खस्ता है। वहाँ भर्ती होने का मतलब मौत को बुलाना है। इसलिए सरकारी हस्पतालों में कोई जाना नहीं चाहता है। निजी हस्पतालों में इलाज इतना महंगा है कि आम आदमी उसका खर्च वहन नहीं कर सकता है। पानी का निजीकरण किया जा रहा है जिसके विरोध में हम आन्दोलन कर रहे हैं। बिजली का निजीकरण हुआ। आवश्यक सेवाएं जो सरकार को मुहैया करानी चाहिए, निजी हाथों में दी जा रही हैं। इस चौतरफा निजीकरण के परिणामस्वरूप सब चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। पानी तक आपको खरीद कर पीना पड़ेगा। भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के चलते बहु-राष्ट्रीय कम्पनियों की बड़ी-बड़ी पूँजी जो बाहर से आई इसके कारण लाखों छोटे और मझोले उद्योग बन्द हो गए। नरसिम्हा राव के शासन काल में जब मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे, कांग्रेस ने भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की नीतियों को लागू किया था। ये क्या कांग्रेस की नीति है? बाद में जब बीजेपी की वाजपेयी सरकार आई तो इसी नीति को और भी तेजी से लागू किया गया। यहाँ तक कि नाल्को, बाल्को आदि ये सब जो सार्वजनिक उद्योग हैं, इनका निजीकरण करने के लिए वाजपेयी सरकार ने एक विनिवेश मंत्रालय बनाया था। अरुण शौरी जिसके मंत्री थे। ये पूँजीपति वर्ग की ही पार्टियाँ हैं। आज जब दस साल के कांग्रेसी कुशासन के बाद संकट भयंकर हो गया तो जनता में गुस्से ने भयंकर रूप ले लिया है। आन्दोलन फूट पड़ रहे हैं। पूँजीपति वर्ग गहन संकट में है। इस संकट के कारण कांग्रेस को हटा कर अपने ही एक विकल्प बीजेपी को वह सत्ता में लाने का प्रयास कर रहा है। इसे हमें समझना पड़ेगा कि ये पूँजीपति वर्ग की एक चाल है। कांग्रेस भी उनकी पार्टी है और बीजेपी भी उनकी ही एक पार्टी। कांग्रेस जब भ्रष्टाचार और घोर जन-विरोधी नीतियों के चलते बदनाम हो गई, उससे शासन चलेगा नहीं, चले तो आन्दोलन फूट पड़ेगा, भयंकर स्थिति पैदा हो जाएगी इसलिए इसको हटा कर अपनी ही एक अन्य पार्टी बीजेपी को सामने ला रहे हैं और बीजेपी आने के साथ-साथ साम्प्रदायिक आवेग भी देश भर में बढ़ रहा है। एक साम्प्रदायिक ताकत को कैसे चुनाव आयोग रजिस्ट्रेशन देता है यह समझ से बाहर की बात है।

ऐसा दावा किया जाता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। एक धर्मनिरपेक्ष राज्य वह होता है जहाँ भगवान मानने वालों और न मानने वालों, आस्तिक और नास्तिक, दोनों को ही बराबर समझा जाता है। हिन्दू, मुस्लिम, इसाई या बुद्धिस्ट में कोई फर्क नहीं किया जाता। एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की नजरों में सभी व्यक्ति समान होते हैं। धर्मनिरपेक्ष राज्य किसी धर्म को प्रोत्साहन भी नहीं देता तथा हतोत्साहित भी नहीं करता। लेकिन हमारे देश में क्या हो रहा है? सरकार सभी धर्मों को प्रोत्साहित कर रही है। यहाँ बाईबल, कुरान, गीता, महाभारत सभी पढ़कर सुनाया जाता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि सभी धर्मों को प्रोत्साहन देने का मतलब धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं, बल्कि बहुधर्मीय राज्य होता है। सभी धर्मनिरपेक्षता की बातें कर रहे हैं। घोर साम्प्रदायिक पार्टी बीजेपी भी धर्मनिरपेक्ष होने का दावा कर रही है। लेकिन असलियत तो अमित शाहों और गिरीराज सिंहों के माध्यम से सामने आ रही है। आज देश में मुस्लिम-विरोधी कट्टर मानसिकता को इस प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है कि मुसलमान की बात आते ही आम आदमी सोचता है मुसलमान मतलब आतंकवादी, मुसलमान मतलब अपराधी। बीजेपी ऐसा एक मनोभाव देश में फैला रही है। दूसरी तरफ कांग्रेस सीधे-सीधे मुसलमानों के खिलाफ कुछ नहीं कहती है। लेकिन कश्मीर बॉर्डर पर झगड़ा लगा कर एक पाकिस्तान-विरोधी मानसिकता को उकसाती है। पाकिस्तान-विरोध और मुस्लिम-विरोध हमारे देश में लगभग समानार्थी हो गए हैं।

यदि आप गहराई से समझें तो जो एक कट्टरवादी मानसिकता देश में बढ़ रही है इसी को आधार करके फासीवाद आता है। इन्सान में जब विचार करने की ताकत खत्म हो जाती है तो इन्सान-इन्सान नहीं रहता है। जब इंसानियत मर जाती है तो इन्सान वहशी बन जाता है। आपने देखा कैसे गर्भवती महिला का पेट चीर कर बच्चा निकाल कर जलाने में आनन्द ले सकता है इंसान? इनको आप इन्सान कहोगे? समाज को इस प्रकार बना देते हैं। जर्मनी में क्या हुआ था? लाखों-लाख यहूदियों को गैस चैम्बरों में घुसा कर गैस दे कर मार दिया। जघन्य यातनाएं देकर मार दिया। आँखों के सामने अत्याचार हो रहा है लेकिन जरा भी संवेदना नहीं, इंसान मशीन हो जाता है। मशीन से भी बदतर हो जाता है। इंसान नहीं रहता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने बताया था कि यदि फासीवाद आ जाए तो इंसान बनने का रास्ता बन्द हो जाता है। इंसान बनना संभव नहीं रहता। इन्सान क्या होता है? इन्सान में प्रेम होता है। इन्सान में विचार करने की ताकत होती है। चिन्तन का विकास होता है और यह ज्ञान-विज्ञान बिना संभव नहीं होता है। विज्ञान के आधार पर विचार करने से ही चिन्तन विकसित होता है। तब न्यूटन का स्तर हासिल किया जा सकता है। तभी आंइस्टाइन बना जा सकता है। हर कोई बन सकता है यदि वह वास्तव में ही ज्ञान की चर्चा करे। फासीवाद विचार करने की ताकत को खत्म कर देता है। हमारे देश में यही हो रहा है और ये काफी दूर तक आगे बढ़ गया है। शासक वर्ग, ये कॉरपोरेट घराने मोदी को सामने ला रहे हैं, प्रोजेक्ट कर रहे हैं। इससे भी बड़ी बात है ये जो मुसलमानों के खिलाफ भयंकर अंधेपन की मानसिकता पैदा कर दी। ये मोदी हो या कोई भी हो, फासीवाद लाने के लिए उसको इस्तेमाल कर सकते हैं। फासीवाद में दो चीजें होती हैं। एक है पूँजीवादी देश में जब पूँजी कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथ में संकेन्द्रित होती है तो उसके आधार पर राजसत्ता भी केन्द्रीकृत हो जाती है। राजसत्ता बहुत शक्तिशाली हो जाती है। यहाँ उद्योगपति-मिलिट्री- अफसरशाही गठजोड़ शासन चलाता

( शेष पृष्ठ 5 पर )

# कॉ. चक्रवर्ती का भाषण

( पृष्ठ 4 का शेष )

है। सरकार जो आप देखते हो ये सिर्फ पूँजीपति वर्ग की पोलिटीकल मैनेजर होती है। पीछे से असल में ये तीन मिलकर शासन चलाते हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि ये प्रशासनिक फासीवाद है जो हमारे देश में आ गया है। दूसरी चीज है इस फासिस्ट स्टेट के पीछे जब उग्र राष्ट्रीयतावाद की अंधी मानसिकता लेकर तमाम लोग खड़े हो जाते हैं तभी सम्पूर्ण फासीवाद आता है जैसा जर्मनी में, इटली में हमने देखा। हमारे देश में अभी तक सम्पूर्ण फासीवाद नहीं आया है लेकिन लाने का प्रयास चल रहा है। बहुत दूर तक तैयार भी हो गया है लेकिन उनकी इच्छा से ही आ जाएगा ऐसा नहीं है।

ये तो एक पहलू हमने देखा। मार्क्सवाद सिखाता है कि कोई भी स्थिति एब्सोल्यूट नहीं होती है। ये जो अंधेरा पक्ष हमने देखा इसमें एक उजला पक्ष भी है, एक रोशनी भी है। रोशनी कहाँ? जहाँ आम जनता में आन्दोलन की चाह बढ़ रही है। आम जनता में एक रोष पैदा हो रहा है। लेकिन वे जानते नहीं कि उनका दुश्मन कौन है? कांग्रेस के खिलाफ हो या बीजेपी या अन्य किसी पार्टी के खिलाफ गुस्सा हो ये असल बात नहीं। असल दुश्मन तो है पूँजीपति वर्ग और ये तमाम संसदीय पार्टियाँ उनकी ही पार्टियाँ हैं। असल में पूँजीवादी व्यवस्था के कारण ही तमाम संकट पैदा हो रहा है। लेकिन कोई भी कारण के रूप में पूँजीवाद को नहीं दिखा रहा। हमारे देश में तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियाँ सीपीआई, सीपीआई (एम), सीपीआई(एमएल) ये विदेशी साम्राज्यवाद और देशी सामंतवाद को दुश्मन के रूप में दिखा रही है जो कि है नहीं। असल दुश्मन तो है पूँजीवादी व्यवस्था, पूँजीपति वर्ग, अम्बानी, अदानी, टाटा-बिड़ला, गोयन्का इत्यादि। जनता में ये समझदारी पैदा करनी है। जनता को यदि समझाया जाए, जनता यदि ठीक-ठीक समझे और इस चेतना के आधार पर यदि उनका संगठन बनाया जाए तो 120 करोड़ की आबादी वाले हमारे देश की 50% जनता, यानी 60 करोड़ जनता यदि क्रान्ति के लिए तैयार हो जाए तो इस पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ देगी। ये बदलाव लाने का सवाल है। जब तक पूँजीवादी व्यवस्था रहेगी तब तक संकट पूरी तरह हल नहीं होगा। आन्दोलन के चलते कुछ-कुछ मांगें हम हासिल कर सकते हैं। लेकिन जीवन की मूलभूत समस्याएं पूँजीवाद में हल नहीं हो सकती हैं वह चाहे बेरोजगारी हो, महंगाई हो, भ्रष्टाचार हो। इसके लिए पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना होगा और उखाड़ फेंकने के लिए शक्ति चाहिए। शक्ति के बल पर ही पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ा जा सकता है। पार्टी को आज इसी ढंग से ही विकसित करना है। आम जनता में इस बात को ले जाना है कि सरकार बदलने से समस्या का हल नहीं होगा। कितनी बार सरकारों की अदला-बदली हुई है। चाहे कांग्रेस आए या बीजेपी, नीतियाँ वहीं रहती हैं। दोनों ही पूँजीपतियों की पार्टियाँ हैं। ये पूँजीवाद की ही सेवा करेंगी। पूँजीवाद की सेवा करते-करते कांग्रेस बदनाम हो गई। उसके खिलाफ आपके अन्दर रोष पैदा हो गया, बीजेपी भी जब पूँजीवाद की सेवा करते-करते ऐसी ही बन जाएगी तब आप क्या करोगे? फिर से कांग्रेस को लाओगे! ऐसा ही तो हो रहा है। इससे फर्क क्या पड़ रहा है? जिन्दगी में कोई बदलाव नहीं हुआ। जनता बदलाव चाहती है। लेकिन क्या बदलाव, किसका बदलाव ये नहीं समझती है।

लोग समझते हैं कि यदि अच्छी पार्टी मिले तो सब ठीक हो जाएगा। किसको अच्छी पार्टी के रूप में पेश किया जा रहा है आम आदमी पार्टी को। आपको समझना चाहिए एक वर्ग विभाजित समाज में कोई पार्टी वर्ग से परे नहीं हो सकती है। ये मजदूर वर्ग की पार्टी तो है नहीं! तो किस वर्ग की पार्टी है। यदि बुर्जुआ वर्ग की न भी हो तो कम से कम मध्यम वर्ग की जिसे हम पेटी बुर्जुआ वर्ग कहते हैं, उसकी पार्टी हो सकती है। केजरीवाल जी ने खुद बताया कि हम पूँजीवाद के खिलाफ नहीं हैं। तो पूँजीवाद की भी सेवा करोगे और जनता को भी मुक्ति दिलाओगे ये दोनों एक साथ नहीं हो सकता है। बदलाव लाना चाहते हो, बदलाव का मायने क्या है? इस पूँजीवादी व्यवस्था का यदि बदलाव न लाओ तो बदलाव की बात बेमानी है। हो सकता है कुछ मांगें आप पूरी कर दे सकते हो जैसे पानी चाहिए, पानी दिया, इससे ज्यादा कुछ नहीं। लेकिन मालिक, मालिक रहेगा और मजदूर मजदूर ही रहेगा, शोषक शोषक रहेगा और शोषित शोषित के रूप में ही रहेगा। लेनिन ने यह बार-बार दिखाया। हालांकि ऐसा होता नहीं है फिर भी तर्क की खातिर मान लिया जाए कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन से तमाम मांगें पूरी हो जाएं तब भी मालिक मालिक ही रहेगा, मजदूर उजरती गुलाम ही रहेंगे। मुक्ति नहीं होगी। मुक्ति तब होगी जब इस शोषणमूलक व्यवस्था को उखाड़ फैंकोगे और उखाड़ फैंकने के लिए पार्टी चाहिए, संगठन चाहिए। इतना शक्तिशाली संगठन चाहिए जो मौजूदा राजसत्ता यानी मिलिट्री, पुलिस, प्रशासन, न्यायतन्त्र का मुकाबला करते हुए इसको परास्त कर सके, उखाड़ फेंके।

एक क्रान्तिकारी पार्टी की ताकत उसके आदर्श में, उसके सिद्धान्त में उसके विचार में है। और ये विचार है मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा जो तमाम हथियारों से ज्यादा ताकतवर है। क्यों? क्योंकि यह इन्सान को एक नहीं संस्कृति एक नया जीवन देती है। पूँजीवाद ने एक समय इन्सान को एक नई संस्कृति, एक नया जीवन दिया था। पूँजीवाद का आधार व्यक्तिवाद है। इस व्यक्तिवाद ने आज निकृष्टतम रूप ले लिया है। इंसान व्यक्तिकेन्द्रित हो रहा है। भाई से भाई लड़ रहा है। माता-पिता को कोई देखता नहीं है। स्वार्थपरता बहुत खराब होती है लेकिन उससे भी निकृष्ट है आत्मकेन्द्रीयता यानी मैं हूँ और मेरे लिए ही सब कुछ है। प्रेम, स्नेह, जैसी कोमल भावनाएं मरती जा रही हैं। सबसे ज्यादा भयंकर संकट सांस्कृतिक क्षेत्र में, नीति-नैनिकता के क्षेत्र में है। नीति-नैतिकता कहने से कुछ बचा नहीं, तभी तो ये चौतरफा भ्रष्टाचार है।

सर्वहारा वर्ग ही नई नीति-नैतिकता को जन्म दे सकता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिया। इसके चलते आप देखोगे हमारी पार्टी के कॉमरेड इस प्रकार इतने समर्पण, इतनी कुर्बानी की भावना से सब कुछ छोड़-छाड़ कर क्रान्तिकारी आन्दोलन में जुटे हुए हैं। ये जो नई संस्कृति जिसे हम सामूहिकतावाद कहते हैं, कहाँ से आयी? मार्क्स ने दिखाया कि ये मजदूर के जीवन से आयी। सामंती युग में जो भूदास थे वे जमीन से बंधे हुए थे। जमींदार अगर इजाजत न दे तो वे जमीन छोड़ कर जा नहीं सकते थे। दिन-रात काम करना पड़ता था। लेकिन वे हल-बैल लेकर अकेले-अकेले उत्पादन करते थे। उत्पादन में उनका हिस्सा नहीं होता था लेकिन उससे कुछ मिलता था उसमें व्यक्तिगत आकांक्षा कहिए, चिन्तन कहिए निहित था। लेकिन बुर्जुआ व्यवस्था में जो नए उद्योग आए उनमें आप देखेंगे मजदूर एक साथ काम करते हैं। अकेला-अकेला कोई उत्पादन नहीं कर सकता है। एक साथ मिलकर सामूहिक रूप में काम करते हैं और जो कुछ उत्पादन करते हैं उसका हिस्सा उनको नहीं मिलता है। इसीलिए मार्क्स ने दिखाया कि मजदूर की जो संस्कृति है वह है सामूहिकतावाद। व्यक्तिवाद का ठीक उल्टा। सामूहिकतावाद के आधार पर जो संस्कृति आती है उसमें खुदगर्जी की कोई जगह नहीं रहती है। यदि मैं सबके लिए सोचूँ, तो सभी मेरे लिए सोचेंगे। कम्युनिस्ट के जीवन का आधार यह सामूहिकतावाद की सबसे उन्नत संस्कृति है। इसी उन्नततम संस्कृति के आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने सही कम्युनिस्ट पार्टी एसयूसीआई (सी) बनाई। सीपीआई नेताओं ने ईमानदारी से कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का प्रयास किया था लेकिन बना नहीं पाए। क्योंकि सर्वहारा संस्कृति की जो मूल चीज होती है सामूहिकतावाद इसे अपनी जिन्दगी में अमल में लाने के लिए उन्होंने संघर्ष नहीं किया। सिर्फ सड़कों पर आन्दोलन करना ही काफी नहीं है। जो कम्युनिस्ट बनेंगे, खास कर जो आन्दोलन को नेतृत्व देंगे यदि वे व्यक्तिवाद को खत्म करते हुए सामूहिकतावाद की संस्कृति को जीवन में न अपनाएं तो वे नेतृत्व नहीं दे सकते। दृष्टिकोण निर्वैयक्तिक होना चाहिए। वस्तु जगत के नियम, आग का नियम, पानी का नियम ये हमारी इच्छा-अनिच्छा पर निर्भर नहीं हैं। ये जो पंखा चल रहा है, ये जो बिजली का नियम काम कर रहा है, ये मेरी वजह से नहीं है। मैं मर भी जाऊँ तो भी पंखा चलता रहेगा। व्यक्तिवादी चिन्तन से यदि इसे जानने का प्रयास करूँ तो कभी जान नहीं सकूँगा। वैज्ञानिक पद्धति हासिल करते हुए अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षण के आधार पर जानने का प्रयास करना होगा। लेकिन इसके लिए निर्वैक्तिक दृष्टिकोण होना सबसे बड़ी जरूरत है। इन दोनों के आधार पर ही आप जान सकते हैं। इसके चरम विकास के रूप मे ही द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्सवाद आया। कम्युनिस्ट उनको ही कहा जाता है जिन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को ठीक-ठीक ढंग से जिन्दगी में अपनाया है। हमारी पार्टी यही दृष्टिकोण, यही संस्कृति लेकर चल रही है।

ये जो एक फासीवादी ट्रेण्ड भयंकर रूप में उभर कर आ रहा है इसे रोकना होगा। इस दृष्टिकोण से ही हम रोक सकते हैं। नहीं तो रोकना सम्भव नहीं होगा। केजरीवाल भी इसे रोकने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन रोक नहीं पाएंगे क्योंकि उनके दृष्टिकोण और इनके दृष्टिकोण में कोई फर्क नहीं है। दोनों ही बुर्जुआ दृष्टिकोण हैं। हो सकता है केजरीवाल की पार्टी उनसे बेहतर है। साम्प्रदायिक नहीं है। बेहतर हो, कुछ भी हो पर दृष्टिकोण यदि एक हो तो उसका मुकाबला कैसे करोगे। ये जो फासीवादी चिन्तन, घोर कट्टरपंथी नजरिया है इसका मुकाबला करने के लिए वैज्ञानिक नजरिया चाहिए। केजरीवाल जो ईश्वर में विश्वास करते हैं, वे कहते हैं कि मुझे तो उम्मीद नहीं थी कि दिल्ली विधानसभा चुनावों में 28 सीटें हमें मिल जाएंगी। तो कैसे मिली? उसके आशीर्वाद से। तो क्या उसके आशीर्वाद से ही पूँजीवाद का मुकाबला किया जाएगा, फासीवाद का मुकाबला किया जाएगा? तो पूजा करते रहो, पर इससे नहीं होगा। बल्कि इस देश में पूजा करके ही फासीवाद आ रहा है। फासीवाद को इस प्रकार रोकना संभव नहीं है। आज समाज गहरे संकट में है आर्थिक-राजनैतिक तो है ही लेकिन सबसे गहरा संकट नीति-नैतिकता के क्षेत्र में, सांस्कृतिक क्षेत्र में है। समाज में यदि हम एक नई संस्कृति को जन्म न दे सके तो इस परिवेश को हम बदल नहीं सकेंगे। और हम ही यह कर सकते हैं क्योंकि कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन में जो नई संस्कृति है वही इसका विरोध कर सकती है। इसलिए मैं बार-बार आपसे अनुरोध करूँगा कि इसे गहराई से समझने का प्रयास करें। आप कितनी गहराई से इसे समझ सके और जिन्दगी में कहाँ तक लागू कर सके इस पर ही समाज का विकास निर्भर करता है। तभी असल में प्रगतिशील आन्दोलन आगे बढ़ेगा। आज यही करना चाहिए।

देखिए कॉरपोरेट घराने किस प्रकार मोदी को प्रोजेक्ट कर रहे हैं। लेकिन इसके खिलाफ ये तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियाँ सीपीआई, सीपीआई(एम), फारवर्ड ब्लॉक, आरएसपी यानी लैफ्ट फ्रण्ट के लोग एक भी बात नहीं बोल रहे हैं। ये जो फासीवादी परिस्थिति पैदा हो रही है इसके खिलाफ देश भर की जो जनवादी और वामपंथी ताकते हैं, सभी को जुटाकर एक आन्दोलन खड़ा करना निहायत जरूरी था ताकि इसको रोका जा सके, लेकिन सीपीआई, सीपीआई(एम), कुछ नहीं कर रही। केजरीवाल जितना कर रहे हैं उतना भी ये लोग नहीं कर रहे हैं। इन्होंने आन्दोलन का रास्ता छोड़ दिया है। फासीवादी ताकतें खुले रास्ते पर आगे बढ़ रही हैं। लेकिन यदि तमाम जनवादी ताकतों को जो इस फासीवाद को रोकना चाहती हैं, उन्हें हम संगठित कर पाएं, यदि समाज में जो सही सोच रखने वाले लोग हैं, चाहे शिक्षकों में हों, प्रोफेसरों में हों, सरकारी कर्मचारियों में हों, मध्यमवर्ग में हों, कही भी हों, शोषित जनता के हर तबके को संगठित किया जाए तो फासीवादी ताकतें बढ़ नहीं पाएंगी।

यहाँ और एक जटिल विषय को हमें समझना चाहिए। ये बात मैने पहले भी रखी थी। जैसे चाहे मुस्लिम हों, इसाई हो, बुद्धिस्ट हों, यहाँ तक कि एससी/एसटी हों, इनमें से ज्यादा से ज्यादा मेहनतकश लोग हैं, यदि वे खुद को मुसलमान, इसाई, बुद्धिस्ट मान करके सोचें तो वे अल्पसंख्यक हैं लेकिन यदि वे मेहनतकश जनता या शोषित वर्ग के एक अंश के रूप में खुद को सोचें तो वे बहुसंख्यक हैं। किसी भी देश में आबादी का 90% हिस्सा मेहनतकश जनता होती है। हमारी सबसे बड़ी पहचान है कि हम मजदूर हैं। यदि तमाम मेहनतकश शोषित जनता एकजुट हो जाए तो हम बहुत बड़ी ताकत हैं और हम इस फासीवादी हमले को रोक सकते हैं। ये एक लाख, दो लाख, दस लाख भी हों देखने से लगता है बाप रे बाप कितने लोग उनके साथ हैं लेकिन 120 करोड़ की आबादी के देश में ये कुछ भी नहीं। यदि सभी मजदूर, शोषित जनता, कारखाने के मजदूर, खेत मजदूर, छोटे किसान, छोटे कर्मचारी, कारखाने के मजदूर, सभी एकजुट हो जाएं, मध्यम वर्ग को यदि हम हमारी तरफ खींच सकें तब पूँजीपति वर्ग ज्यादा से ज्यादा 10% हैं वे अलग-थलग हो जाएगा। तभी क्रान्ति की स्थिति तैयार होगी। हमें यही करना है।

24 अप्रैल पार्टी स्थापना दिवस का तात्पर्य क्या है? क्रान्तिकारी पार्टी की स्थापना का मतलब है तब से देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ है। इससे पहले क्रान्ति समर्थक नजरिया था। सीपीआई व अन्य पार्टियाँ थीं। एसयूसीआई(सी) के जन्म के साथ -साथ इस देश का क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ। एसयूसीआई(सी) के विकास के साथ-साथ ये क्रान्तिकारी आन्दोलन व्यापक रूप ले रहा है विस्तृत हो रहा है। जितनी जल्दी हम इसे विकसित कर पाएंगे उतनी जल्दी क्रान्तिकारी ताकत विकसित होती जाएगी और इस फासीवादी चिन्तन को हम अलग-थलग कर देंगे, कोने में धकेल देंगे। यह संभव भी

( शेष पृष्ठ 7 पर )

# मई दिवस पर श्रमिकों ने अपने हकों के लिए किया एकजुटता का इजहार

दिल्ली में ट्रेड यूनियनों के संयुक्त जुलूस में शामिल एआईयूटीयूसी के कार्यकर्ता और सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

**दिल्ली :** मई दिवस के अवसर पर एआईयूटीयूसी की दिल्ली राज्य कमेटी की ओर से एक सभा का आयोजन गांधी शान्ति प्रतिष्ठान (आईटीओ) के सभागार में किया गया। एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध दिल्ली की तमाम यूनियनों के प्रतिनिधियों और मजदूर-कर्मचारियों ने इसमें हिस्सा लिया। इसमें आशा वर्कर्स और आंगनवाड़ी वर्कर्स की भागीदारी उल्लेखनीय रही। एआईयूटीसी के सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड सत्यवान सभा के मुख्य वक्ता थे और एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड प्रताप सामल आमंत्रित अतिथि थे। सभा में एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध यूनियनों के प्रतिनिधियों ने अपनी बात रखी। एआईयूटीयूसी के राष्ट्रीय सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड रमेश शर्मा, दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड मैनेजर चौरसिया और अन्य वक्ताओं ने भी सभा को सम्बोधित किया। एआईयूटीयूसी के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉमरेड हरीश त्यागी ने सभा का संचालन किया।

दिल्ली में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

हर वर्ष की तरह सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों का एक जुलूस राम लीला मैदान से निकाला गया। जिसमें एआईयूटीयूसी के अलावा एटक, सीटू, एचएमएस, एआईसीसीटीयू, टीयूसीसी, यूटीयूसी व मजदूर एकता कमेटी से सम्बद्ध ट्रेड यूनियनों के मजदूरों ने हिस्सा लिया। जुलूस टाऊन हॉल पहुँच कर सभा में तब्दील हो गया। एआईयूटीयूसी की ओर से कॉ. सत्यवान ने सभा को सम्बोधित किया।

कॉमरेड सत्यवान ने अपने भाषण में कहा कि मई दिवस हर साल एकता का पैगाम लेकर आता है। मई दिवस देश और दुनिया के मजदूरों के संघर्षों का प्रतीक है और हमारे बलिदानों का गवाह है। ये संघर्ष को जारी रखने की शपथ लेने का दिन है। देश के पूँजीपतियों ने आज हमारा खून चूसते-चूसते हमें कंगाल और बदहाल बना दिया है। आज ये काम के घण्टे बढ़ा कर अपना मुनाफा बढ़ाना चाहते हैं। मजदूरों के महान नेता कार्ल मार्क्स ने बताया था कि मजदूर जो मजदूरी पाता है वह दो तीन घण्टे के काम से ही पूरी हो जाती है इसके ऊपर मजदूर जो काम करता है उससे मालिक की तिजोरी भरती है। मई दिवस के संघर्ष ने ही आठ घण्टे के कार्य दिवस की मांग हासिल की थी। संविधान में, कानून की किताब में आठ घण्टे के कार्य दिवस की बात लिखी गई है लेकिन संविधान और कानून को पूँजीपतियों ने ताक पर रख दिया है। अपने मुनाफे और अधिकतम मुनाफे को बढ़ाने के लिए गैर-कानूनी तरीके से मजदूरों से 14-14 घण्टे, यहाँ तक कि 18-18 घण्टे काम करवाया जाता है। ये नहीं चलेगा। हम पर हमले हो रहे हैं। वेतन कटौती की जा रही है। न्यूनतम वेतन देने से मना किया जा रहा है। यूनियन बनाने के अधिकार पर हमला हो रहा है। हम कहीं भी आवाज उठाते हैं भिवाड़ी हो, मानेसर हो गुड़गांव की मारूति हो, हम पर दमन चलाया जाता है। हमारी आवाज का गला घोंटा जाता है।

मई दिवस एक और सीख हमको देता है। पूँजीपति वर्ग ने दुनिया के लोगों को बहकाने की कोशिश की थी कि कानून सबके लिए बराबर है। लेकिन मई दिवस में क्या हुआ था? पूँजीपतियों ने अपने ही टुक्कड़खोरों को जज की कुर्सी पर बैठा कर अदालत का ढोंग रचा था। मजदूर नेताओं को फांसी की सजा सुना दी गई। कोई गवाही नहीं, कोई सुनवाई नहीं। मई दिवस ने खोलकर रख दिया कि पूँजीपतियों की ये पुलिस, अदालतें मजदूरों को कुचलने के लिए हैं। ये राजसत्ता मजदूरों के संघर्षों को कुचलने के लिए है। चुनाव एक ढकोसला है। मई दिवस के आह्वान को बुलन्द करते हुए महान एंगेल्स ने कहा था क्रान्ति के लिए कदम आगे बढ़ाओ भविष्य तुम्हारा है। भविष्य आज समाजवाद का है, साम्यवाद का है। भविष्य शोषणहीन समाज बनाने का है। हम मिलकर पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति की मंजिल को हासिल करेंगे। मई दिवस का यही आह्वान है।

**सागर (म.प्र.):** सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की सागर इकाई के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर पहली मई को तिली बाघराज वार्ड, स्थानीय कार्यालय में आम सभा आयोजित की गई। मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) पार्टी के जिला सचिव डॉ. रामअवतार शर्मा ने कहा कि हम देख रहे हैं कि देश की आजादी के 67 साल गुजर जाने के बावजूद देश शोषित-उत्पीड़ित गरीब मेहनतकश मजदूर जनता की न केवल संख्या में बल्कि उनके जीवन की दुर्दशा में भी दिनों-दिन बढ़ोतरी होती जा रही है। देश में चल रही निजीकरण व ठेकेदारी प्रथा ने फिर से मजदूरों को 10-12 घण्टे काम करने के लिए मजबूर कर दिया है। इस स्थिति में देश की शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए मेहनतकश जनता को क्रान्तिकारी चेतना से वर्ग सचेत होकर सर्वहारा संस्कृति और कम्युनिस्ट चरित्र के आधार पर संगठित करने की जरूरत है। चुनावों से देश के पालिटिकल

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गुड़गांव, हरियाणा में मई दिवस की सभा में शामिल एआईयूटीयूसी कार्यकर्ता

नारनौल (हरियाणा) में प्रदर्शन करते हुए एआईयूटीयूसी कार्यकर्ता

## मई दिवस ...

(पृष्ठ 6 का शेष)

मैनेजर मंत्रियों के रूप में तो बदले जा सकते हैं लेकिन शोषण-दमन के हथियार पूँजीवादी राजसत्ता को नहीं बदला जा सकता। इसके लिए समाजवादी क्रान्ति की जरूरत है।

सभा की अध्यक्षता कॉ. अशोक कुशवाहा ने की तथा संचालन कॉ. राकेश पटेल के द्वारा किया गया।

**सरायकेला-खरसवा (झारखण्ड) :** मई दिवस के उपलक्ष्य में संयुक्त मजदूर संगठन की ओर से रैली की गई। रैली में चाण्डिल ब्लॉक के मजदूर शामिल हुए। रैली का नेतृत्व एआईयूटीयूसी के कॉ. आशुदेव महतो, कॉ. बुद्धेश्वर माझी, कृष्णा कालिन्दी और मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) की कॉ. लिली दास ने किया।

**भोपाल :** 1 मई को एस.यू.सी.आई (सी) एवं ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी, भोपाल की ओर से मिलकर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मई दिवस मनाया गया। सुबह भेल कारखाने के सभी प्रवेश द्वारों पर पर्चा वितरण किया गया। यूनियन के कार्यवाहक अध्यक्ष के.पी.द्विवेदी ने झण्डा फहराया। भोपाल के सतनामी नगर बस्ती में असंगठित क्षेत्र के सैकड़ों मजदूरों की सभा की गई। कॉमरेड्स जे.सी.बरई, जॉली सरकार एवं निवेदिता ने सभा को संबोधित किया। सिंगमवार जी व एसी सरकार भी उपस्थित रहे। शाम को भेल कारखाने के फाउण्ड्री गेट पर सैकड़ों भेल कर्मचारियों की हुई सभा को भेल लेबर यूनियन के के.पी. द्विवेदी, यूनियन के महासचिव जे.सी. बरई, एस.यू.सी.आई (कम्यूनिस्ट) भोपाल इकाई की कॉ. जॉली सरकार एवं विजय शर्मा ने संबोधित किया।

सभी वक्ताओं ने क्रांतिकारी विचार व आदर्श के आधार पर मजदूर आन्दोलन व जनआंदोलन तेज करने एवं हमारी यूनियन व पार्टी को मजबूत बनाने का आह्वान किया। गगनभेदी नारों के साथ सभा सम्पन्न हुई।

**भिवानी :** ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) के लाल झण्डे तले भवन निर्माण कारीगर-मजदूरों, खेत मजदूरों व अन्य मजदूर-कर्मचारियों ने 1 मई को जुलूस निकाल कर यहां 128वां मई दिवस शानदार ढंग से मनाया। जुलूस नेहरू पार्क से शुरू हुआ और घण्टा घर, सराय चौपटा, होते हुए दिनोद गेट पहुंच कर समाप्त हो गया। नेहरू पार्क में हुई सभा की अध्यक्षता भवन निर्माण कारीगर-मजदूर यूनियन हरियाणा (रजि. नं. 1845) के जिला सचिव कॉ. धर्मवीर सिंह ने की।

मई दिवस के गौरवमय इतिहास और मजदूर आन्दोलन में इसका महत्व बताते हुए एआईयूटीयूसी के राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल ने सभी मजदूर-कर्मचारियों से केन्द्र व राज्य सरकारों की मजदूर-विरोधी नीतियों, महंगाई-बेरोजगारी बढ़ाने वाली निजीकरण, उदारीकरण व भूमण्डलीकरण की नीतियों और ठेका प्रथा के खिलाफ मजदूर आन्दोलन को जोरदार लहर खड़ी करने का आह्वान किया। भवन निर्माण कारीगर-मजदूर यूनियन हरियाणा (रजि. नं. 1845) के राज्य कोषाध्यक्ष कॉमरेड राजकुमार, जिला अध्यक्ष वजीर चंद, सहसचिव देवदत्त ने भी सभा को सम्बोधित किया।

भिवानी, हरियाणा में जुलूस में शामिल एआईयूटीयूसी कार्यकर्ता

# प्रतिक्रियावादी बीजेपी और प्रगतिशील एसयूसीआई(सी) के संग्राम का केन्द्र बन गया वड़ोदरा

### गुजरात में संवाददाता सम्मेलन में पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

गुजरात की वड़ोदरा लोकसभा सीट पर बीजेपी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी के 'विकास' के नारे को बेनकाब करते हुए यहां से एसयूसीआई(सी) के उम्मीदवार जनआन्दोलन के नेता कॉमरेड तपन दासगुप्ता धुंआधार प्रचार कर रहे हैं।

एसयूसीआई(सी) पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती इस लोकसभा क्षेत्र में मौजूद रह कर प्रचार कार्य की देखरेख कर रहे हैं। 21 अप्रैल को वड़ोदरा शहर में एक संवाददाता सम्मेलन में पार्टी की गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड द्वारकानाथ रथ और कॉमरेड तपन दासगुप्ता की मौजूदगी में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने अन्य बातों के अलावा यह कहा कि एसयूसीआई(सी) देश के 16 राज्यों में 83 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। गुजरात में वड़ोदरा संसदीय क्षेत्र से पार्टी का उम्मीदवार खड़ा किया है। वड़ोदरा सीट का चुनाव बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी सीट से बीजेपी के नेतृत्व में प्रतिक्रियावादी ताकतों और एसयूसीआई(सी) के नेतृत्व में प्रगतिशील ताकतों के बीच संग्राम का केन्द्र बन गया है। हम जनता से अपील करते हैं कि कांग्रेस, बीजेपी सहित तमाम बुर्जुआ पार्टियों को परास्त करें और एसयूसीआई(सी) के उम्मीदवार कॉमरेड तपन दासगुप्ता को विजयी बनाते हुए जनआन्दोलन को तेज करें।

## कॉ. चक्रवर्ती का भाषण

(पृष्ठ 5 का शेष)

है और करना भी होगा। 24 अप्रैल का आह्वान है देश भर में जो आन्दोलन की ताकतें हैं उन सभी को संगठित कीजिए। जहाँ-जहाँ भी, जिनमें भी जनवादी चिन्तन है उनको इस तरफ लाइए। यदि हम एकजुट हो जाएं तो वे हमारे सामने कुछ भी नहीं हैं। यदि हम बिखरे रहे तो इस भयंकर ताकत को रोका नहीं जा सकेगा। फासीवाद जैसे जर्मनी में इटली में आया था हमारा देश भी उसका शिकार हो जाएगा। हम होने नहीं देंगे यही शपथ आज लेनी है। देश में जो भी जनवाद है उसको न सिर्फ बचाना है बल्कि विकसित करना है। धर्मनिरपेक्ष जनवादी चिन्तन देश में लाना है।

ये जो उग्र हिन्दू मानसिकता है इसे भी आपको समझना चाहिए नहीं तो भ्रान्ति पैदा हो सकती है। क्या हम हिन्दू के खिलाफ हैं? बिल्कुल नहीं। धर्म के साथ साम्प्रदायिकता का कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई भी धर्म किसी पर हमला करना नहीं सिखाता है। शंकराचार्य के बाद इस युग के सबसे बड़े हिन्दू नेता स्वामी विवेकानन्द हुए हैं। इनसे बड़ा हिन्दू नेता अभी तक हुआ नहीं। आप विवेकानन्द को पढ़िए। वे साम्प्रदायिकता के सख्त खिलाफ थे। साम्प्रदायिकता किसे कहते हैं? साम्प्रदायिकता का मतलब है अपने सम्प्रदाय के प्रति एक अंधा प्रेम। इसका उल्टा मायने है दूसरे सम्प्रदाय के प्रति अंधी नफरत। कुछ दिन पहले केदारनाथ के एक महंत ने कहा था कि बीजेपी, आरएसएस, बजरंग दल, विश्व हिन्दू परिषद जो कर रहे हैं उसका धर्म के साथ कोई सम्बंध नहीं है। वह धर्म के खिलाफ है। आम जनता में धर्म विश्वास तो है और इसी धर्म विश्वास को वे इस प्रकार इस्तेमाल करके जनता को भ्रमित करते हैं। एक दूसरे के खिलाफ नफरत पैदा करते हैं।

हरियाणा में ढंढ में मई दिवस पर सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ.बाबूराम

हमें समझना चाहिए मजदूर चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, है तो मजदूर ही। बिड़ला तो एक महाहिन्दू हैं, जगह-जगह बिड़ला मन्दिर बनवाएं हैं इतने बड़े हिन्दू हैं, तो बिड़ला के कारखाने में जो मजदूर हिन्दू हैं क्या वे उनसे कहेंगे कि तुम हिन्दू हो हम तुम्हारा शोषण नहीं करेंगे। हम तो सिर्फ मुसलमानों का ही शोषण करेंगे। वे मुसलमान मजदूर का शोषण जिस प्रकार करते हैं उसी तरह हिन्दू-मजदूर का भी शोषण करते हैं। उनके लिए दोनों ही मजदूर हैं और हम हिन्दू-मुसलमान के रूप में झगड़ा करते रहते हैं। वे खुश होकर देखते हैं अच्छा है लड़ो-लड़ो। हिन्दू-मुसलमान लड़ो। मजदूर एकजुट नहीं होने चाहिएं। मजदूर को समझना चाहिए कि मजदूर वर्ग की ताकत एकता में है। मजदूर आन्दोलन की पहली बात होती है एकता की रक्षा करना। आँख की पुतली की तरह एकता की रक्षा करना जरूरी है और एकता की रक्षा करने के लिए सबसे बड़ी जोड़ने वाली ताकत होती है धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र। धर्मनिरपेक्षता ही वह जोड़ने वाली ताकत है जो हिन्दू, मुसलमान, इसाई, बुद्धिस्ट कोई भी हो उनको एकजुट करती है। इस धर्मनिरपेक्ष जनतन्त्र पर ही हमला हो रहा है। आप देख रहे हैं कि कितने भयंकर रूप से ये उग्र हिन्दू मानसिकता तैयार हो रही है। आखिरकार इसका शिकार तो मेहनतकश जनता ही होगी। जीवन की धर्मनिरपेक्ष जनवादी अवधारणा, धर्मनिरपेक्ष जनवादी नजरिए और मूल्यबोधों पर हमला हो रहा है और इसकी रक्षा करना शोषित जनता के लिए सबसे जरूरी है।

आखिर में यही कहूँगा कि एकमात्र कॉमरेड शिवदास घोष के विचार ही रास्ता दिखा सकते हैं जिनके आधार पर मैंने ये सब बातें रखीं। आज इस भयंकर संकट की घड़ी में कॉमरेडों को समझना चाहिए कि जैसी विकट स्थिति तैयार हो रही है इसको रोकने की जो शक्ति है वह भी कम नहीं है बल्कि इससे कई गुना ज्यादा है। हालांकि उसे हमें जुटाना है, संगठित करना है। शोषित जनता को एकजुट करते हुए इस झण्डे के नीचे लाना है। तभी हम इसको रोक पाएंगे। यदि जनता में क्रान्तिकारी चेतना और चरित्र की सृष्टि होती है, यदि उनका अपना संगठन बने जो हमें बनाना है तो दुनिया की कोई ताकत उसको दबा नहीं सकती है। 24 अप्रैल पार्टी स्थापना के दिन हमें पार्टी को बढ़ाने, विस्तारित करने और मजबूत बनाने की शपथ लेनी है। आज के दिन का महत्व, ऐतिहासिक जरूरत यही है। मैं उम्मीद करता हूँ कॉमरेड समझते हुए और भी लगन से पार्टी काम में शामिल होंगे, पार्टी को मजबूत करेंगे, पार्टी को विस्तारित करेंगे। यह कहते हुए हमारे शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष को लाल सलाम देते हुए मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 6 May, 2014



# इस्ताम्बूल में साम्राज्यवाद-विरोधी सभा में शामिल हुए कॉ. माणिक मुखर्जी

13 से 21 अप्रैल तक तुर्की के इस्ताम्बूल शहर में 'साम्राज्यवाद, आक्रमण, आतंकवाद' विरोधी विचार गोष्ठी में इन्टरनेशनल एंटी-इम्पीरियलिस्ट कोऑर्डिनेटिंग कमेटी के महासचिव कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने प्रतिनिधित्व किया। अन्य कई देशों के प्रतिनिधियों ने भी अपने वक्तव्य रखे।

# एआईएमएसएस ने की बलात्कार के दोषियों को सख्त सजा देने की मांग

एआईएमएसएस की महासचिव डॉक्टर एच.जी. जयालक्ष्मी ने एक बयान मे कहा कि:

''निर्भया काण्ड जैसी ही दिल दहला देने वाली घटना मध्य प्रदेश में घटी है। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक एक 7वीं कक्षा की छात्रा के साथ चलती बस में ड्राईवर और कण्डक्टर तथा अन्य यात्रियों की मिलीभगत से एक सहयात्री द्वारा बलात्कार किया गया। घटना मध्य प्रदेश में सिंगरौली जिले के बैघान पुलिस स्टेशन के अंतर्गत बैघान गाँव की है। गम्भीर रूप से घायल लड़की को जंगल में फैंककर अपराधी फरार हो गए और बाद में उसे एक राहगीर द्वारा बचाया गया।

मेडिकल टीम के सदस्यों में से एक डॉक्टर अल्केश सोनी ने प्रेस को बताया था कि लड़की के साथ बलात्कार हुआ है लेकिन बाद में उसने इंकार कर दिया। लड़की ने अपने बयान में कहा कि उसके साथ बलात्कार हुआ है और इसके अलावा अपराधियों ने अपने इस घृणित अपराध को कबूल कर लिया है।

बस ड्राईवर वीर बली वैश्य, क्लीनर छोटू जयसवाल, राम भजन और जुम्मन शेख सभी चार अभियुक्तों को 15 दिनों की न्यायियक हिरासत में भेजा दिया गया है।

यह भी चिन्ता का विषय है कि कैसे इस पीड़िता पर 'टू-फिंगर वर्जीनिटी टेस्ट' किया गया जबकि इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट की गाइड लाइन मौजूद है। इस घृणित अपराध के खिलाफ एआईएमएसएस और एआईडीएसओ द्वारा पहले ही भोपाल में प्रतिवाद किया गया है। एआईएमएसएस की अखिल भारतीय कमेटी मध्य प्रदेश सरकार से मांग करती है कि अपराधियों को सख्त सजा दी जाए।''

# सिंगरौली गैंगरेप घटना के खिलाफ किया रोष प्रदर्शन

**भोपाल, म.प्र.:** 20 अप्रैल को सिंगरौली में दोहराई गई दामिनी गैंगरेप जैसी घटना के खिलाफ स्थानीय जिंसी चौराहे पर एआईएमएसएस, एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ की ओर से जोरदार रोष प्रदर्शन किया गया। ऑल इण्डिया एमएसएस की जिला प्रभारी कॉमरेड जॉली सरकार ने इस घटना की कड़ी निन्दा करते हुए कहा कि सरकार की सोची समझी नीतियों के तहत ही टी.वी., इण्टरनेट व प्रचार माध्यमों में अश्लीलता, अपसंस्कृति व नशाखोरी को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी कारण आज समाज में महिलाओं को उपभोग की वस्तु की नजर से देखा जा रहा है। जिसके चलते छात्रों व युवाओं के बुद्धि, विवेक को खत्म किया जा रहा है ताकि महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों, महंगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा जैसी समस्याओं के खिलाफ सचेत जनान्दोलन संगठित न हो सके। छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ के जिला प्रभारी विनोद लोगरिया ने कहा कि 8वीं कक्षा तक पास-फेल सिस्टम हटा देने के चलते बच्चों की चिन्तन क्षमता को खत्म किया जा रहा है ताकि सही इंसान का निर्माण न हो सके, जो अन्याय का विरोध करें। प्रदर्शन का संचालन पारुल शर्मा ने किया व बड़ी संख्या में लोग प्रदर्शन में शामिल हुए। अंत में महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के खिलाफ एकमात्र सचेत व संगठित जनान्दोलन ही एकमात्र रास्ता बताते हुए जनआन्दोलन को मजबूत करने की अपील की गई। बाद में जोरदार नारों के साथ प्रदर्शन का समापन किया गया।

सिंगरौली रेप कांड के खिलाफ 23 अप्रैल को कटक, ओडिशा में रोष प्रदर्शन करते एआईडीएसओ, डीवाईओ, एआईएमएसएस कार्यकर्ता

## खराब परीक्षा परिणाम पर जताया रोष

**गुना (म.प्र.) :** जीवाजी विश्वविद्यालय से संबंधित विभिन्न महाविद्यालयों के विभिन्न विषयों के लगातार खराब परीक्षा परिणामों के खिलाफ एआईडीएसओ गुना जिला ईकाई के नेतृत्व में 21 अप्रैल को छात्रों द्वारा प्रदर्शन किया गया जिसमें गुना, आरोन, अशोक नगर व ग्वालियर से सैकड़ों छात्र-छात्राएं शामिल हुये। आंदोलन में शामिल छात्र छात्राओं ने बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम., के पंचम सेमेस्टर की विशेष परीक्षा कराने की मांग की, साथ ही मांग की कि विशेषज्ञ से कापियों की पुन: जांच कराई जाये। आंदोलन के प्रभाव में वि वि प्रशासन ने कॉपियों की पुन: जांच संबंधित महाविद्यालय के प्रध्यापक की उपस्थिति में कराने की मांग को स्वीकार किया।

## कटक कलैक्ट्रेट कार्यालय के बाहर एआईडीएसओ का विरोध प्रदर्शन

परीक्षा परिणामों में अनियमितताओं के कारण 2 मई को कटक, ओडिशा में मैट्रिक के बीएसई बोर्ड के बाहर उत्तर पुस्तिकाओं की दोबारा जांच की मांग कर रहे आईडीएसओ कार्यकर्ताओं पर हुए बर्बर पुलिस लाठीचार्ज का विरोध करते हुए 3 मई को एआईडीएसओ ने अखिल भारतीय विरोध दिवस मनाया। इस दिन यहां कटक कलैक्ट्रेट कार्यालय के बाहर एआईडीएसओ द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। इस लाठीचार्ज में 12 छात्रों को चोटें आई।

परीक्षा परिणामों में अनियमितताओं के खिलाफ 2 मई को कटक, ओडिशा में मैट्रिक के बीएसई बोर्ड के बाहर रोष प्रदर्शन करते एआईडीएसओ कार्यकर्ता

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com